छत्तीसगढ़ी फिल्मों की विकास यात्रा पर एक विवेचनात्मक अध्ययन

डॉ. अजय कुमार शुक्ल
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (हिन्दी)

श्री चंदन सिंह राजपूत
सहायक प्राध्यापक (इतिहास)
कला एवं मानविकी संकाय
कलिंगा वि.वि. नया रायपुर (छ.ग.)

शोध सारांशः–

आज का युग जनसंचार माध्यमों का युग है। जनसंचार माध्यमों में फिल्म सबसे सशक्त माध्यम है। छत्तीसगढ़ी भाषा में फिल्म का इतिहास लगभग साठ वर्ष पुराना है। इन साठ वर्षो में छत्तीसगढ़ी फिल्मों की विकास यात्रा जारी है। सामाजिक परिवर्तन और जागरूकता के साथ–साथ मनोरंजन प्रदान करने में छत्तीसगढ़ी फिल्मों का महत्वपूर्ण योगदान है। इन फिल्मों का प्रभाव आम जनता पर सबसे अधिक पड़ता है। इसमें पढ़े लिखे लोगों से लेकर गरीब जनता तक सम्मिलित है। छत्तीसगढ़ी फिल्म में ''कही देबे संदेश'' से लेकर वर्तमान समय में प्रदर्शित फिल्मों में मनोरंजन, यथार्थ, काल्पनिक सुख और उद्देश्यपरकता के दर्शन होते है।

बीज शब्दः–

सिनेमा, छालीवुड, स्वर्णिम दौर, बढ़ते कदम, नकारात्मक पक्ष।

प्रस्तावनाः–

आधुनिक समाज की महत्वपूर्ण कलाओं में सिनेमा भी एक प्रमुख कला है। जो अन्य कलाओं की तरह हमारे समय और समाज को प्रतिबिंबित करती है। वर्तमान समय में मानव जीवन एवं समाज को प्रभावित करने वाले विभिन्न माध्यमों में हिन्दी फिल्मों का लगभग सौ वर्ष से पुराना इतिहास है। जहाँ वह मूक और श्वेत–श्याम पिक्चर के निर्माण से लेकर आज के दौर तक लगातार गतिशील और तकनीकी रूप में लगातार समृद्ध होती रही है। हिन्दी फिल्मों से प्रेरणा लेते हुए विभिन्न अंचल में वहाँ की स्थानीय भाषा में भी फिल्मों का निर्माण होता रहा है। छत्तीसगढ़ में भी यहाँ की स्थानीय भाषा में फिल्में बनायी जाती है। समय बढ़ने के साथ–साथ यहाँ की फिल्म इंडस्ट्री भी लगातार समृद्ध होती जा रही है। प्रस्तुत शोधपत्र में छत्तीसगढ़ी फिल्मों की विकास यात्रा के संदर्भ में एक विवेचनात्मक अध्ययन किया गया है।

छत्तीसगढ़ और छालीवुड (प्राथमिक चरण):–

भारतवर्ष के मध्य में छत्तीसगढ़ राज्य स्थित है। 1 नवंबर 2000 को भारतीय संघ में इसे राज्य के रूप में स्थापित किया गया है। इसके पूर्व यह विदर्भ और मध्यप्रदेश का अविभाजित हिस्सा रहा है। छत्तीसगढ़ अंचल में निवासरत जनता छत्तीसगढ़ी बोली बोलती है। छत्तीसगढ़ राज्य गठन के उपरांत राज्य सरकार ने छत्तीसगढ़ी बोली को प्रदेश की राजभाषा के रूप में मान्यता प्रदान की है। यहाँ की भाषा, इतिहास, साहित्य, कला, संस्कृति एवं परंपराओं के साथ सिनेमा का भी गौरवशाली इतिहास है। जिस प्रकार अंग्रेजी फिल्मों को 'हालीवुड' और हिन्दी फिल्मों को 'बालीवुड' के नाम से जाना जाता है। उसी प्रकार छत्तीसगढ़ी बोली में निर्मित सिनेमा को 'छालीवुड' के नाम से जाना जाता है।

छत्तीसगढ़ी सिनेमा की शुरूआत 1965 ई. में बनी ''कही देबे संदेस'' के रिलीज होने के साथ होती है। इस फिल्म के निर्देशक और निर्माता मनु नायक थे। रायपुर जिले के कुर्रा गांव के निवासी मनु नायक छत्तीसगढ़ी फिल्मों के पितृ पुरूष माने जाते है। 1961 में आई भोजपुरी फिल्म 'गंगा मैया तोहे पियरी चढ़ाईबो' से प्रेरित होकर उन्होंने छत्तीसगढ़ी फिल्म 'कही देबे संदेस' बनाने का निर्णय लिया। इस फिल्म के लिए दुर्ग निवासी हनुमंत नायडु ने गीत लिखे थे। जबकि उस समय के सुप्रसिद्ध गायक मोहम्मद रफी, मन्ना डे, महेन्द्र कपूर और सुमन कल्याणपुर ने इन गीतों में स्वर दिया था। छत्तीसगढ़ी फिल्म जगत में मनु नायक को छत्तीसगढ़ी फिल्मों के दादा साहेब फालके के नाम से जाना जाता है।

यह श्वेत–श्याम फिल्म अंतर्जातीय प्रेम कथा पर आधारित थी। एक सवर्ण जाति की लड़की और एक अनुसूचित जाति के लड़के की प्रेम कथा पर बनी इस फिल्म का रूढ़िवादी विचारकों ने तीव्र विरोध किया था, और इस पर प्रतिबंध लगाने की मांग की थी। उस समय की प्रखर समाज सेविका एवं लोकप्रिय सांसद मिनी माता, भूषण कीर और अन्य समाज सुधारको ने इस फिल्म का समर्थन किया और इस फिल्म को साम्प्रदायिक सद्भावना और राष्ट्रीय एकीकरण के लिए मील का पत्थर बताया। उस समय की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने भी इस फिल्म को देखा और इसकी सराहना की।

इसी क्रम में छः वर्ष के पश्चात दुसरी छत्तीसगढ़ी फिल्म 'घर–द्वार' रिलीज हुई। जिसके निर्माता, निर्देशक भनपुरी रायपुर के विजय पाण्डेय एवं निरंजन तिवारी थे। यह फिल्म पारिवारिक पृष्ठभूमि पर आधारित थी। इस फिल्म में छत्तीसगढ़ के जमाल सेन के द्वारा गीत लिखा गया था। जिसे उस समय के सुप्रसिद्ध गायक मोहम्मद रफी और सुमन कल्याणपुर ने स्वर प्रदान किया था। 1971 में रिलीज हुई इस फिल्म में दुलारी बाई, कान मोहन, रंजिता ठाकुर, गीता कौशल, जफर अली फरिश्ता, इकबाल अहमद रिजवी, बसंत दीवान और नीलू मेघ ने प्रमुख भूमिकाएँ निभाई थी। इस फिल्म के गीत–संगीत बहुत लोकप्रिय थे। छत्तीसगढ़ी फिल्म जगत में छत्तीसगढ़ी फिल्मों के विजय पाण्डेय को भीष्म पितामह के नाम से जाना जाता है।

छत्तीसगढ़ में पहली और दूसरी फिल्म का छत्तीसगढ़ी फिल्म इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। वैसे यह दोनों फिल्में व्यावसायिक रूप से सफल नहीं हो पायी और इन्हें हिट या सुपरहिट फिल्म का तमगा हासिल नहीं हो पाया। विदित हो कि उस समय छत्तीसगढ़ अंचल मध्यप्रदेश का हिस्सा था। राज्य शासन के द्वारा क्षेत्रीय भाषा में बनी फिल्मों को कोई सहायता प्रदान नहीं की जाती थी। सीमित संसाधन, धनाभाव और तकनीकी अनुपलब्धता के साथ–साथ छत्तीसगढ़ी भाषा की सीमित दर्शकवर्ग होने के कारण इस फिल्म निर्माताओं को बहुत परेशानी झेलनी पड़ी। इस सबके बावजूद भी मनु नायक और विजय पाण्डेय ने अपनी मजबूत इच्छा शक्ति से अपनी भाषा में फिल्म बनाने के स्वप्न को साकार किया और आने वाली पीढ़ी के मार्गदर्शक के रूप में स्थापित हुए।

छत्तीसगढ़ी फिल्मों का स्वर्णिम दौरः–

लंबे समय के बाद 2000 का साल छत्तीसगढ़ के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। एक तो 1 नवंबर 2000 को छत्तीसगढ़ को नए राज्य का दर्जा प्रदान किया गया और उसके कुछ ही दिनों पहले छत्तीसगढ़ी सिनेमा जगत में ''मोर छंइहा भुईयां'' नाम की फिल्म प्रदर्शन हुई। जिसने सफलता के नये–नये कीर्तिमान स्थापित किए। छत्तीसगढ़ के भानुप्रतापपुर में रहने वाले सतीश जैन इस फिल्म के निर्माता, निर्देशक थे। इस फिल्म के लिए सुप्रसिद्ध छत्तीसगढ़ी गीतकार लक्ष्मण मस्तूरिया ने गीत लिखा था। इस फिल्म के सभी कलाकार छत्तीसगढ़ के थे। यह पहली छत्तीसगढ़ी फिल्म थी जो 109 दिनों तक लगातार 5 शो प्रतिदिन प्रदर्शित होकर 27 हफ्ते तक चलने का रिकार्ड बनाया था। इस फिल्म के नायक अनुज शर्मा के रूप में छत्तीसगढ़ी फिल्म को एक नया सुपर स्टार मिला।

मोर छईया भुईया की अपार सफलता के बाद छत्तीसगढ़ी फिल्मों के स्वर्णिम दौर का प्रारंभ होता है। निर्माता निर्देशक सतीश जैन ने इसके बाद ''मया दे दे, मया ले ले'' और ''झन भूलौ माँ बाप ला'' जैसी बेहतरीन पिक्चर बनायी। इसके अतिरिक्त परदेसी के मया, तोर मया के मारे, टूरा रिक्शा वाला, लैला टिप टाप और छैला अंगूठा छाप जैसी कुछ फिल्में अति सफल फिल्मों की श्रेणी में सम्मिलित हुयी। जबकि मयारू भौजी, रधुबीर, तीजा के लुगरा, भांवर, मया दे दे मयारू, महूँ दीवाना तहूँ दीवानी और राजा छत्तीसगढ़िया जैसी फिल्मों ने भी दर्शकवर्ग को आकर्षित किया है। इसके अतिरिक्त बनिहार, गांजे की कली, जोहार छत्तीसगढ़, मया के मंदिर, प्रेम के बंधना, मोर सुन्दर छत्तीसगढ़, परदेशी के मया, मोहिनी, महूं कुवारा तहूं कुवारी, हंस झन पगली फंस जाबे जैसी फिल्में लोकप्रिय सिद्ध हुई है।

आज छत्तीसगढ़ी फिल्मों की लोकप्रियता को इस नजरिए से समझा जा सकता है कि बहुत सी छत्तीसगढ़ी फिल्मों का विभिन्न भाषाओं में डबिंग कर अन्य प्रदेशों में रिलीज किया जा रहा है। आज तक लगभग 200 से अधिक छत्तीसगढ़ी फिल्मों का निर्माण किया जा चुका है। वर्तमान समय में भी नये–नये विषय पर नयी प्रतिभाओं के साथ उत्कृष्ट छत्तीसगढ़ी फिल्म का निर्माण किया जा रहा है।

छत्तीसगढ़ी सिनेमा के बढ़ते कदमः–

प्रसिद्ध छालीवुड लेखक मनोज वर्मा निर्देशित छत्तीसगढ़ी फिल्म 'भूलन द मेज' को 67वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार समारोह में राष्ट्रीय पुरस्कार से नवाजा गया। इसके साथ ही अंतर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल इटली एवं कैलिफोर्निया में इस फिल्म को पुरस्कार मिल चुका है। यह छत्तीसगढ़ के सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं कवि संजीव बक्शी के उपन्यास 'भूलन कांदा' पर आधारित है। इस फिल्म की कहानी में देश के न्याय व्यवस्था पर प्रश्न चिह्न उठाया गया है। यह फिल्म सिर्फ छत्तीसगढ़ में ही नही बल्कि देश के विभिन्न सिनेमाघरों और मल्टीप्लेक्स में रिलीज हो रही है। इसके अतिरिक्त 'चमन बहार' वेब सीरिज ने राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रियता हासिल की है। जिसे छत्तीसगढ़ी पृष्ठभूमि पर निर्मित किया गया है। राष्ट्रीय परिदृश्य में 'दिल्ली 6' में 'ससुराल गेंदा फूल' छत्तीसगढ़ी गीत ने अत्यंत लोकप्रियता हासिल की थी। इसी प्रकार प्रख्यात रंगकर्मी हबीब तनवीर ने छत्तीसगढ़ी लोकसंस्कृति को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध करने का महत्वपूर्ण कार्य किया था। वर्तमान छत्तीसगढ़ी फिल्मों में छत्तीसगढ़ी लोकसंस्कृति को चित्रित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया जा रहा है।

छत्तीसगढ़ फिल्मों के शुरूआती दौर से अभी तक की यात्रा में बदलाव के चिह्न स्पष्ट रूप से दिखलायी पड़ते हैं। वर्तमान समय में महत्वपूर्ण विषय पर सार्थक फिल्मों का निर्माण हो रहा है। छत्तीसगढ़ की युवा पीढ़ी अपने ताजगी भरे नये विषय और नयी सोच के साथ छत्तीसगढ़ी फिल्मों में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि छत्तीसगढ़ी सिनेमा में परिवर्तन की झलक स्पष्ट रूप से दिखलायी पड़ रही है। कला, संस्कृति एवं साहित्य से जुड़े हुए लोग भी छत्तीसगढ़ी सिनेमा में रूचि ले रहे हैं और उसकी समृद्धि के लिए भरसक सहयोग भी कर रहे हैं। 'चमन बहार' जैसे वेब सीरिज के लोकप्रिय होने के बाद मौलिक विषय पर युवावर्ग अपनी मौलिक विचारों से छत्तीसगढ़ी फिल्म जगत को समृद्ध कर रहे हैं। राज्य और केन्द्र सरकार भी छत्तीसगढ़ी फिल्मों से जुड़े हुए लोगों का सम्मान कर रही है। 2014 में फिल्म अभिनेता अनुज शर्मा और पार्श्वगायिका ममता चंद्राकर को पद्मश्री से सम्मानित करना इसका प्रमाण है। वर्तमान सरकार भी सिनेमा निर्माण के लिए विभिन्न सुविधाएँ उपलब्ध करा रही है। फिल्मी कलाकारों के हित के लिए विभिन्न योजनाएँ बनाई जा रही है। जिससे लगता है कि भविष्य में छत्तीसगढ़ी फिल्मों के लिए सुनहरे दिन आने वाले हैं।

छत्तीसगढ़ी फिल्मों का नकारात्मक पक्षः–

यह कहने में कोई संकोच नही है कि छत्तीसगढ़ी फिल्म इंडस्ट्री के द्वारा बनी बहुत सारी छत्तीसगढ़ी फिल्म फूहड़ और स्तरहीन है। जिसमें स्तरहीन कहानी, संवाद और अभिनय का प्रभाव दिखलायी पड़ता है। सस्ती लोकप्रियता हासिल करने के लिए स्तरहीन शीर्षक और अश्लील गीतों का सहारा भी लिया जाता है। अधिकांश फिल्म निर्माता आर्थिक

रूप से सम्पन्न नहीं होते है जिसके कारण फिल्म में अभिनय करने वाले अभिनेताओं, संगीतकार, कोरियोग्राफर, कहानी लेखक, तकनीकी विशेषज्ञ को उचित पारिश्रमिक नही मिल पाता है। जिसके कारण योग्य एवं अनुभवी लोग ऐसी फिल्मों में काम करने में रूचि नही लेते है। विदित हो कि हिन्दी फिल्मों की अपेक्षा छत्तीसगढ़ी फिल्म देखने वालों की संख्या बहुत कम हैं। पिछली सरकारों ने फिल्म उद्योग के लिए अनुदान एवं अन्य सहायता उपलब्ध कराने में रूचि नही ली थी। जिसके कारण अधिकांश छत्तीसगढ़ी फिल्मों में गुणवत्ता एवं कलात्मकता दिखलायी नही पड़ती हैं।

उपसंहारः–

उपर्युक्त तथ्यों की विवेचना के पश्चात समग्र रूप से यह कहा जा सकता है कि 1965 से लेकर 2022 तक छत्तीसगढ़ी फिल्म की विकास यात्रा जारी है। सीमित संसाधन, आर्थिक समस्या एवं अन्य संसाधनों की कमी के बावजूद छत्तीसगढ़ में श्रेष्ठ फिल्मों का निर्माण हुआ है और यह प्रक्रिया जारी है। निश्चित रूप से अभी भी बहुत कमियाँ है। जिसकी आलोचना एवं सुधार करने की कोशिश निरंतर जारी है। छत्तीसगढ़ी सिनेमा के माध्यम से छत्तीसगढ़ी लोकजीवन, लोकसंस्कृति और लोकभाषा को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने की शुरूआत हो चुकी है। आने वाले समय में छत्तीसगढ़ सिनेमा का भविष्य सुखद है।

संदर्भ सूचीः–

1. राहुल सिंह – छत्तीसगढ़ी फिल्म, सिंहावलोकन।
2. एकांत चौहान – छत्तीसगढ़ी फिल्मों का सफर, https//www.cgfilm.in
3. अनुज शर्मा – छत्तीसगढ़ी फिल्म के सुपरस्टार अनुज शर्मा से खास बातचीत, न्यूज 18 (हिन्दी)।
4. अनुज शर्मा – उपलब्धियों से भरा है छत्तीसगढ़ी सिनेमा का सफर, नईदुनिया।
5. डॉ. अजय कुमार शुक्ल–छत्तीसगढ़ी सिनेमा के बढ़ते कदम, sahityacinemasetu.com
6. छत्तीसगढ़ी सिनेमा इतिहास – https//www.hmoob.in
7. छत्तीसगढ़ी के फिल्म जगत – https//cg.sahity.in
8. योग मिश्रा – अभी खत्म नही हुई छत्तीसगढ़ी फिल्मों की विकास यात्रा, अपना मोर्चा।
9. राहुल सिंह – छत्तीसगढ़ी की पहली फिल्म – कही देबे संदेश, रायपुर दुनिया।
10. चित्रसेन साहू – इतिहास रचने वाली पहली छत्तीसगढ़ी फिल्म मोर छंइहा भूईयां – just36news.com
11. छालीवुड – विकिपीडिया – https//hi.m.wikipedia.org